Daily Gospel Reflections in Hindi

12 August 2019

मत्ति 23: 34 - 39

JESUS MOURNS OVER JERUSALEM

प्रभु येसु में हमें संपूर्ण मानवता और ईश्वरता का संगम देखने को मिलता है। आज के सुसमाचार में हम प्रभु को यरुशालेम के लिए उसी तरह व्याकुल और चिंतित होते देखते हैं जैसा कि कोई अपने प्रिय को खोने के भय से व्याकुल और चिंतित होता है। कितना सुंदर और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत है कि –मैं तुझे वैसे भी सुरक्षित रखना चाहता हूँ जैंसे मुर्गी चूजों को अपने डैनों के नीचे छिपा लेती है–, यह चित्रण सिर्फ मुर्गी से तुलना ही नहीं बल्कि प्रतीक है कि किस तरह प्रभु स्वयं हर कष्ट को हमारे लिए सह कर हमें हर मुसीबत से बचायेंगे। सलीब पर फैले उनके हाथ मुर्गी के पंखों की तरह ही हमारी रक्षा हेतू खुले हैं हम सब चूजों की भांति उन के नीचे शरण लें।

सुसमाचार में हम अक्सर प्रभु को कठोर शब्दों का प्रयोग करते देखते हैं जैंसे सांप और करैत के बच्चों... आदि। जो पिता अपने पुत्र को प्यार करता वह उसे डांटता और दण्डित करता है (प्रवक्ता 13:24)। प्रभु येसु दिखाना चाहते है कि सुधार के लिए कठोर होना गलत नहीं क्योंकि इस कठोरता से मन परिर्वतन हो सकता हैं और यही प्रभु का एकमात्र उद्धेश्य है कि हर मनुष्य उनके द्वारा मुक्ति पाये। ईश्वर हमें सही राह पर ले चलने के लिए कठोर मार्ग अपनाता है। कठोरता मनुष्य के धैर्य, सहनशीलता और अज्ञाकारिता का प्रतीक हैं । स्वयं प्रभु ने कहा कि जो अंत तक धीर बना रहेगा उसे मुक्ति मिलेगी। (मत्ती24:13) यदि हमारे जीवन में कठोर शब्दों का सामना करना पड़ रहा है तो यह स्पष्ट है कि प्रभु हमें चेतावनी दे रहें है अथवा हमें कष्टों का सामना करा कर वे हमारे धैर्य की परीक्षा ले रहें हैं ।

Rev. Fr. Anil Francis

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019